हॉरर फिल्म 'रूह' में नजर आयेंगे इमरान हाशमी

बॉलीवुड अभिनेता इमरान हाशमी पांच वर्ष बाद एक बार फिर हॉरर शैली की फिल्म में नजर आएंगे। इमरान हाशमी की नई फिल्म 'रूह' की आधिकारिक घोषणा कर दी गई है, जो एक म्यूजिकल हॉरर फिल्म होगी.इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'आवारापन 2' की शूटिंग में व्यस्त इमरान हाशमी की नई परियोजना 'रूह' का शीर्षक जारी किया गया है.

फिल्म का निर्देशन मयंक शर्मा करेंगे, जबकि इसकी कहानी मयंक शर्मा और विशाल कपूर ने लिखी है. विकेड फिल्म्स के बैनर तले बन रही इस फिल्म का निर्माण विक्रम खाखर और सनी खन्ना कर रहे हैं. निर्माताओं के अनुसार 'रूह' को वर्ष 2027 में हिंदी, तमिल और तेलुगु भाषाओं में सिनेमाघरों में प्रदर्शित किया जाएगा.

इमरान हाशमी को हिंदी सिनेमा में हॉरर फिल्मों के लिए विशेष पहचान मिली है. उन्होंने 'राज', 'राज 3', 'एक थी डायन' और 'राज: रीबूट' जैसी फिल्मों में काम किया है. उनकी पिछली हॉरर फिल्म 'डिब्बुक' थी, जो ओटीटी पर रिलीज हुई थी. फिल्म के बारे में इमरान हाशमी ने कहा कि 'रूह' ने उन्हें पहली नजर में आकर्षित किया क्योंकि यह आधुनिक हॉरर, भावनाओं और संगीत का प्रभावशाली संगम प्रस्तुत करती है. उन्होंने कहा कि यह ऐसा जॉनर है जिससे दर्शक उन्हें लंबे समय से जोड़ते रहे हैं और फिल्म की दुनिया बेहद रोमांचक तथा भावनात्मक है.

'भरत अहलावत ने बताया जज्बातों को संभालना है सबसे बड़ी चुनौती

ज़ी टीवी का 'जाने अनजाने हम मिले', जिसमें भरत अहलावत (राघव) और आयुषी खुराना (रीत) मुख्य भूमिकाओं में नजर आ रहे हैं, अपनी भावनाओं से भरी कहानी के जरिए लगातार दर्शकों को बांधे हुए है. हाल ही में राघव और रीत के अपने नवजात बच्चे को खोने वाले ट्रैक ने भी दर्शकों के दिल को छू लिया. इस कहानी ने लोगों को भावुक कर दिया और राघव-रीत के दर्द से जोड़ दिया. इस मुश्किल समय के बीच राघव भी लगातार रिश्तों और जिम्मेदारियों के बीच फंसा हुआ नजर आता है. उसके किरदार की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वह हमेशा रीत के लिए अपने प्यार और परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के बीच सही संतुलन बनाने की कोशिश करता है. वह चाहे रीत का साथ दे या अपने परिवार का, किसी न किसी को दुख जरूर पहुंचता है. मौजूदा ट्रैक में भी जब शारदा बुआ (जयति भाटिया) रीत से माफी मांगने के लिए कहती हैं और रीत मना कर देती है, तब राघव एक बार फिर बीच में फंस जाता है और घर में शांति बनाए रखने के लिए खुद माफी मांग लेता है. किसी एक का ज्यादा साथ देता हुआ न लगे और दोनों तरफ की भावनाओं को बराबरी से दिखा पाए, यही बात राघव के किरदार को इतना अलग और मुश्किल बनाती है.

हिरानी फिल्मों में हालात ही असली विलेन : विक्रांत

बॉलीवुड अभिनेता विक्रांत मैसी ने कहा है कि फिल्मकार राजकुमार हिरानी की फिल्मों की सबसे बड़ी खासियत यह है कि उनमें विलेन कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि परिस्थितियां होती हैं.जिओहॉटस्टार पर 03 जुलाई को प्रीमियर होने जा रही साइबरक्राइम कॉमेडी-ड्रामा सीरीज़ 'प्रीतम और पेड्रो' को लेकर दर्शकों में उत्सुकता बढ़ती जा रही है.

राजकुमार हिरानी के साथ मिलकर बनाई गई इस सीरीज़ में रहस्य, हास्य और भावनाओं का अनोखा मिश्रण देखने को मिलेगा. कहानी एक ऐसी अनोखी जोड़ी के इर्द-गिर्द घूमती है, जो कई दिलचस्प साइबर अपराध मामलों के बीच अपनी यात्रा तय करती है. सीरीज़ में काम करने के अनुभव को साझा करते हुए विक्रांत मैसी ने कहा, राजकुमार हिरानी की फिल्मों में विलेन कभी इंसान नहीं होता, बल्कि हमेशा हालात होते हैं. उनकी फिल्मों में विलेन से आप कभी नफ़रत नहीं कर सकते. विक्रांत मैसी ने कहा कि लोग जन्म से बुरे नहीं होते, बल्कि जीवन की चुनौतियां, परिस्थितियां और बेबसी के क्षण उन्हें ऐसे फैसले लेने पर मजबूर कर देते हैं, सच में जिनकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की होती. यही मानवीय दृष्टिकोण राजकुमार हिरानी की फिल्मों को खास बनाता है और दर्शकों को पात्रों से भावनात्मक रूप से जोड़ता है. विक्रांत मैसी की यह टिप्पणी हिरानी की कहानी कहने की शैली को भी रेखांकित करती है, जिसमें इंसानियत हमेशा केंद्र में रहती है. उनकी फिल्मों में पात्र पूरी तरह अच्छे या बुरे नहीं होते, बल्कि परिस्थितियों से जूझते आम इंसान होते हैं. यही वजह है कि उनकी कहानियां दर्शकों के दिलों को छू जाती हैं. प्रीतम और पेड्रो के प्रीमियर के साथ दर्शकों को रहस्य, हास्य और भावनाओं से भरपूर एक नया अनुभव मिलने वाला है.

बेबी डू डाई डू' में हुमा का नया किरदार

बॉलीवुड अभिनेत्री हुमा कुरैशी का कहना है कि उनकी आगामी फिल्म 'बेबी डू डाई डू' में में उनका किरदार भारतीय दर्शकों के लिए बिल्कुल नया और अनोखा अनुभव साबित होगा. हुमा कुरैशी ने आज यहां फिल्म के टीजर एवं फिल्म के कटआउट के अनावरण के अवसर पर बताया कि यह फिल्म हिंदी सिनेमा में किसी मूक-बधिर महिला को एक पेशेवर हत्यारी के रूप में केंद्र में रखकर बनाई गई हैं,जो बेहद कम देखने को मिलती हैं. फिल्म में नायिका एक शब्द नहीं बोलती हैं और केवल एक्शन करती हैं. उन्होंने कहा कि फिल्म केवल एक क्राइम थ्रिलर नहीं है, बल्कि इसमें एक्शन, सस्पेंस और डार्क ह्यूमर का ऐसा मिश्रण है जो दर्शकों को लगातार बांधे रखेगा.

हुमा कुरैशी ने कहा कि बेबी का चरित्र जितना खतरनाक है, उतना ही मानवीय भी है और यही विरोधाभास उसे विशेष बनाता है. यही कारण है कि इस भूमिका को निभाना उनके लिए एक चुनौतीपूर्ण और रोमांचक अनुभव रहा. उन्होंने कहा कि बेबी डू डाई डू का सबसे बड़ा आकर्षण उसका केंद्रीय किरदार है. यह ऐसा चरित्र है जिसे भारतीय दर्शकों ने पहले कभी पर्दे पर नहीं देखा.

हुमा ने बताया कि निर्देशक नचिकेत सामंत ने फिल्म की दुनिया को बेहद बारीकी से गढ़ा है. उन्होंने कहा कि उनके भाई और अभिनेता-निर्माता साकिब सलीम के साथ इस परियोजना पर काम करना उनके लिए एक यादगार अनुभव रहा. उन्होंने बताया कि सलीम सिब्लिंग्स और पुणे 04 के सहयोग से निर्मित यह फिल्म तीन जुलाई को सिनेमाघरों में प्रदर्शित होगी. फिल्म में सिकंदर खेर, चंकी पांडे, रचित सिंह, मरुधा शेखावत, विद्या मालवदे, अरुण कुशवाह और हिमांशु मलिक भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में दिखाई देंगे.

दिया ने सुनाई संघर्ष और सफलता की कहानी

बॉलीवुड की खूबसूरत और प्रतिभाशाली अभिनेत्री दिए मिर्ज़ा एक बार फिर चर्चा में हैं, लेकिन इस बार वजह उनकी कोई फिल्म नहीं बल्कि उनकी प्रेरणादायक सफलता की कहानी है. हाल ही में फराह खान के यूट्यूब व्लॉग में दर्शकों को दिया मिर्जा के घर की झलक देखने को मिली. इस दौरान अभिनेत्री ने अपने जीवन से जुड़ा एक ऐसा किस्सा साझा किया, जिसने फैंस का दिल जीत लिया.

घर की सैर कराते हुए दिया मिर्जा ने बताया कि उन्होंने महज 19 साल की उम्र में यह घर खरीदा था. अभिनेत्री के अनुसार, अपने परिवार में खुद की कमाई से घर खरीदने वाली वह पहली लड़की थीं. उन्होंने कहा कि घर खरीदना हमेशा से उनका सपना था और जैसे ही उन्हें मौका मिला, उन्होंने इसे पूरा करने में देर नहीं की.

दिया ने बताया कि उनकी शुरुआती फिल्मों में से एक तुमको न भूल पाएंगे से मिली फीस ने उनके इस सपने को साकार करने में मदद की. उस समय इतनी कम उम्र में घर खरीदना आसान नहीं था, लेकिन उन्होंने अपनी मेहनत और समझदारी से यह उपलब्धि हासिल की. अभिनेत्री की यह बात सुनकर फराह खान भी बेहद खुश दिखाई दीं और उन्होंने इसे एक बड़ी उपलब्धि बताया. व्लॉग में दिखाया गया दिया मिर्जा का घर सादगी और खूबसूरती का बेहतरीन उदाहरण है. घर का हर कोना उनकी पसंद और प्रकृति प्रेम को दर्शाता है.

स्पेशल रीकैप ने फिर जगाई मिर्जापुर की यादें

मिर्जापुर: द मूवी को लेकर दर्शकों का इंतजार लगातार बढ़ता जा रहा है और इसी बीच मेकर्स ने एक खास रीकैप वीडियो जारी कर फैंस के उत्साह को नई उड़ान दे दी है। यह वीडियो सीधे दर्शकों को उस दौर में ले जाता है, जब 'मिर्जापुर' का पहला सीजन ओटीटी की दुनिया में एक नई क्रांति लेकर आया था. अपनी दमदार कहानी, बेहतरीन किरदारों और रोमांचक घटनाक्रमों के दम पर इस सीरीज ने भारतीय दर्शकों के बीच अलग पहचान बनाई थी.

रीकैप वीडियो में पहले सीजन के कई महत्वपूर्ण दृश्यों को शामिल किया गया है. सत्ता की लड़ाई, रिश्तों की जटिलता, बदले की आग और अपराध की दुनिया से जुड़े वे सभी पल फिर से सामने आते हैं, जिन्होंने इस शो को सुपरहिट बनाया. वीडियो में कालीन भैया की सत्ता, मुन्ना भैया का बेखौफ अंदाज और गुड्डू भैया के संघर्ष को खास तौर पर उभारा गया है. यही किरदार इस फ्रेंचाइजी की सबसे बड़ी ताकत माने जाते हैं. मेकर्स ने वीडियो को केवल पुराने पलों तक सीमित नहीं रखा है. इसमें कुछ ऐसे संकेत भी देखने को मिले हैं, जिन्हें लेकर सोशल मीडिया पर चर्चाएं तेज हो गई हैं. फैंस का मानना है कि जल्द ही फिल्म या फ्रेंचाइजी से जुड़ा कोई बड़ा अपडेट सामने आ सकता है. यही वजह है कि रीकैप वीडियो रिलीज होते ही इंटरनेट पर चर्चा का विषय बन गया. वीडियो में एक्शन से भरपूर सीक्वेंस, अप्रत्याशित ट्विस्ट और किरदारों के बीच की तीखी दुश्मनी को भी प्रमुखता से दिखाया गया है.

यह वही तत्व हैं, जिन्होंने 'मिर्जापुर' को भारत की सबसे चर्चित वेब सीरीज में शामिल किया. रीकैप दर्शकों को याद दिलाता है कि यह सिर्फ एक शो नहीं, बल्कि एक ऐसी कहानी है जिसने भारतीय ओटीटी कंटेंट की दिशा बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

राख में दमदार अभिनय से चर्चा में आए विवान शर्मा

युवा अभिनेता विवान शर्मा अपनी हालिया सीरीज 'राख' में निभाए गए साहिल के किरदार को लेकर सुर्खियों में हैं। महज 14 वर्ष की उम्र में विवान ने अपने प्रभावशाली अभिनय से दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया है. विवान शर्मा इससे पहले 'चल ज़िंदगी', 'सोशल मंडिया' और वेब सीरीज 'शहर लखोट' में अपने अभिनय का हुनर दिखा चुके हैं. उनकी शॉर्ट फिल्म 'टेल मी व्हाय?' को विभिन्न फिल्म समारोहों में सराहना मिली थी. वर्ष 1978 के चर्चित रंगा-बिल्ला मामले से प्रेरित सीरीज 'राख' में विवान ने साहिल नामक बालक की भूमिका निभाई है. कहानी एक ऐसे मासूम बच्चे के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपनी बहन के साथ एक अनजान सवारी में बैठने के बाद भयावह घटनाओं का सामना करता है.

स्टारप्लस का नया रियलिटी शो इंडिया के टॉप 1 परसेंट

टेलीविजन पर अपनी पहचान बनाने का सपना देखने वालों के लिए एक बड़ा अवसर सामने आया है. स्टार प्लस का नया रियलिटी शो 'इंडिया के टॉप 1 परसेंट' अब प्रतिभागियों के लिए अपने दरवाजे खोल चुका है. शो के लिए रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया शुरू हो गई है और इसके विजेता को एक करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि दी जाएगी.

अभिनेता अनिल कपूर द्वारा होस्ट किए जाने वाले इस शो में प्रतिभागियों की समझ, तार्किक क्षमता, अवलोकन कौशल और त्वरित निर्णय लेने की योग्यता की परीक्षा होगी. शो का उद्देश्य देश के सबसे तेज और होशियार दिमागों को एक मंच पर लाना है. शो में हिस्सा लेने के इच्छुक प्रतिभागी रजिस्ट्रेशन के लिए स्टार प्लस की आधिकारिक वेबसाइट पर आवेदन कर सकते हैं. शो में छात्र, प्रोफेशनल, गृहिणी, उद्यमी तथा विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोग भाग ले सकते हैं. आयोजकों का कहना है कि यह कार्यक्रम उन लोगों के लिए एक अनूठा अवसर है, जो अपनी बौद्धिक क्षमता और त्वरित सोच के बल पर राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाना चाहते हैं.

कृषि जगत

घर के गार्डन में आसानी से उगाएं अरबी

घुइयां या अरबी भारतीय रसोई की लोकप्रिय सब्जियों में से एक है. इसकी खेती आमतौर पर खेतों में की जाती है, लेकिन अब लोग इसे अपने किचन गार्डन में भी सफलतापूर्वक उगा रहे हैं. बारिश का मौसम इसकी बुवाई के लिए सबसे अच्छा समय माना जाता है, क्योंकि इस दौरान मिट्टी में पर्याप्त नमी बनी रहती है, जो पौधों के विकास में मदद करती है.

अरबी उगाने के लिए सबसे पहले ऐसी जगह का चयन करें जहां पानी का जमाव न हो और पौधों को पर्याप्त धूप मिल सके. यदि आपके पास जमीन नहीं है, तो बड़े गमले, ग्रो बैग या प्लास्टिक कंटेनर का उपयोग किया जा सकता है. मिट्टी में गोबर की सड़ी हुई खाद या कंपोस्ट मिलाने से पौधों की वृद्धि बेहतर होती है. बुवाई के लिए स्वस्थ और रोगमुक्त कंदों का चयन करना चाहिए. कंदों को लगभग 5 से 7 सेंटीमीटर गहराई पर लगाएं और पौधों के बीच पर्याप्त दूरी रखें. शुरुआती दिनों में मिट्टी को हल्का नम बनाए रखना जरूरी होता है. हालांकि, अधिक पानी भर जाने से कंद सड़ सकते हैं, इसलिए जल निकासी का विशेष ध्यान रखें. अरबी के पौधे तेजी से बढ़ते हैं और नियमित देखभाल के साथ 4 से 5 महीने में फसल तैयार हो जाती है. इस दौरान खरपतवार नियंत्रण और समय-समय पर जैविक खाद देने से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है. यदि पौधों पर कीटों का हमला दिखाई दे तो नीम आधारित जैविक घोल का उपयोग किया जा सकता है.

पानी की कमी में ऐसे करें गेहूं की खेती

कम बारिश की स्थिति में गेहूं की खेती चुनौतीपूर्ण जरूर होती है, लेकिन सही रणनीति अपनाकर किसान इस चुनौती को अवसर में बदल सकते हैं। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि सबसे पहले किसानों को ऐसी किस्मों का चयन करना चाहिए जो कम पानी में भी बेहतर उत्पादन देने की क्षमता रखती हों. सूखा सहनशील और जल्दी पकने वाली किस्में कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए अधिक उपयुक्त मानी जाती हैं.

खेत की तैयारी भी सफलता का महत्वपूर्ण आधार है. बुवाई से पहले गहरी जुताई करने से मिट्टी में नमी लंबे समय तक बनी रहती है. खेत में फसल अवशेष या जैविक पदार्थ मिलाने से मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ती है. इसके अलावा मल्चिंग तकनीक अपनाने से मिट्टी से पानी का वाष्पीकरण कम होता है और पौधों को लंबे समय तक नमी मिलती रहती है. गेहूं की बुवाई समय पर करनी चाहिए. देरी से बुवाई करने पर फसल को अधिक पानी की आवश्यकता पड़ सकती है और उत्पादन प्रभावित हो सकता है. लाइन में बुवाई करने से पौधों को पर्याप्त पोषण और नमी मिलती है, जिससे उनकी वृद्धि बेहतर होती है.उर्वरकों का संतुलित उपयोग भी बेहद जरूरी है. जैविक खाद, गोबर की खाद और कंपोस्ट का उपयोग मिट्टी की गुणवत्ता सुधारता है. साथ ही, नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश की अनुशंसित मात्रा देने से पौधों की जड़ें मजबूत बनती हैं और वे सूखे का बेहतर सामना कर पाते हैं. यदि सिंचाई की सीमित सुविधा उपलब्ध हो, तो किसानों को फसल की महत्वपूर्ण अवस्थाओं पर ही पानी देना चाहिए. गेहूं में क्राउन रूट इनिशिएशन, बालियां निकलने और दाना बनने की अवस्था सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है. इन चरणों पर सिंचाई करने से कम पानी में भी बेहतर उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है. जल संरक्षण तकनीकों, उन्नत किस्मों और वैज्ञानिक प्रबंधन को अपनाकर किसान कम बारिश के बावजूद गेहूं की अच्छी पैदावार हासिल कर सकते हैं.

गोबर से कैसे बनाएं आर्गेनिक खाद

खेती-किसानी में आजकल जैविक यानी ऑर्गेनिक खाद की डिमांड जिस कदर बढ़ी है, उसने कमाई के नए रास्ते खोल दिए हैं. लोग अब अपनी फसलों में अंधाधुंध केमिकल डालने के बजाय नेचुरल विकल्पों की तरफ लौट रहे हैं और इसी का फायदा उठाकर घर बैठे तगड़ा बिजनेस खड़ा किया जा सकता है. इसके लिए शिवांश ऑर्गेनिक खाद बनाने का एक ऐसा नायाब और बेहद आसान तरीका सामने आया है.

जिससे महज 18 दिनों में बेहतरीन क्वालिटी की खाद तैयार हो जाती है. सबसे मजेदार बात यह है कि इस खाद को बनाने में किसी बड़ी मशीन या महंगी तकनीक की जरूरत नहीं पड़ती. बस गोबर, सूखी घास और हरी पत्तियों के सही कॉम्बिनेशन से यह खाद तैयार हो जाती है. जो किसानों के लिए कमाई का सबसे बेस्ट और सीधा जरिया बनती जा रही है. स खास तरीके में खाद बनाने का पूरा खेल लेयरिंग यानी परतों पर टिका है. इसे तैयार करने के लिए सबसे पहले सूखी घास-फूस, पुआल या पेड़ों की सूखी पत्तियों की एक परत बिछाई जाती है. जिसके ठीक ऊपर हरी पत्तियां या खेत का गीला कचरा डाला जाता है. इसके बाद इस पर ताजा गोबर और पानी का गाढ़ा घोल अच्छे से फैला दिया जाता है.

हर चार दिन पर इसकी कसरत करने से महज 18 दिनों में यह पूरी तरह सड़कर काले सोने जैसी कीमती खाद में बदल जाती है. स बिजनेस को शुरू करने में लागत नाममात्र की आती है. क्योंकि इसका सारा कच्चा माल जैसे गोबर, सूखी पत्तियां और घास गांव-देहात में मुफ्त या बेहद कम दामों में आसानी से मिल जाते हैं. एक यूनिट खाद तैयार करने में जहां सिर्फ 15 से 20 हजार रुपये का शुरुआती खर्च आता है, वहीं जब यह मार्केट में बिकने के लिए तैयार होती है तो इसकी वैल्यू कई गुना बढ़ जाती है.

मानसून की बेरुखी से कैसे बचाएं फसल

खरीफ सीजन में मानसून की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है. देश की बड़ी आबादी खेती पर निर्भर है और खरीफ फसलों की सफलता काफी हद तक बारिश पर आधारित रहती है. यदि मानसून कमजोर पड़ता है या बारिश का वितरण असमान रहता है, तो कई प्रमुख फसलों की पैदावार प्रभावित हो सकती है.

धान ऐसी फसल है जिसे शुरुआती अवस्था में पर्याप्त पानी की जरूरत होती है. यदि समय पर बारिश नहीं होती तो नर्सरी तैयार करने और रोपाई में देरी हो सकती है. इससे उत्पादन घटने की आशंका बढ़ जाती है. इसी तरह सोयाबीन की बुवाई भी पर्याप्त नमी पर निर्भर करती है. कम बारिश होने पर बीज अंकुरण कमजोर हो सकता है और पौधों का विकास प्रभावित हो सकता है. मक्का और कपास जैसी फसलों पर भी कमजोर मानसून का असर देखने को मिलता है.

नमी की कमी के कारण पौधों की वृद्धि रुक सकती है और उत्पादन क्षमता घट सकती है. अरहर, उड़द और मूंग जैसी दलहनी फसलों में भी शुरुआती नमी बेहद जरूरी होती है. यदि बारिश में लंबा अंतराल आता है तो फसल पर तनाव बढ़ सकता है. किसान सूखा सहनशील किस्मों का चयन करें और खेत में नमी संरक्षण के उपाय अपनाएं. मल्चिंग, जैविक खाद का उपयोग और खेत की उचित जुताई मिट्टी में नमी बनाए रखने में मदद करती है.

किसानों को मौसम पूर्वानुमान पर लगातार नजर रखनी चाहिए और बारिश में देरी होने की स्थिति में वैकल्पिक फसलें अपनाने पर विचार करना चाहिए. कृषि विभाग और कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा जारी सलाह का पालन करने से जोखिम को कम किया जा सकता है. समय रहते तैयारी कर ली जाए तो कमजोर मानसून की स्थिति में भी फसलों को बड़े नुकसान से बचाया जा सकता है. सही प्रबंधन और वैज्ञानिक खेती के जरिए किसान उत्पादन और आय दोनों को सुरक्षित रख सकते हैं.

जहां सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, वहां पानी का उपयोग योजनाबद्ध तरीके से करना चाहिए.